दृष्टि सृष्टिवाद

'' ऊँ जूं सः ककारे काशी धामें च कैलाशे च तथैव हि
क्षुद्र नदी सुपार्श्व वासी गंगा सम कूप जलं शुभं
नमामि शिव स्वरूपं च शुभं कुरू शुभं कुरु ॥''

भृगु जी ने परम पूज्य सत्गुरू स्वामी जी के प्रति इतना भी कहा है कि ये मेरे गुरू भाई हैं और जो भी इनके स्थान पर एक बार भी दर्शन करेगा, उसके करोड़ों अन्य जन्मों के पाप दग्ध हो जायेंगे। ये सत्य है, इनका जीवन लोक कल्याण के लिए ही है। आप हमेशा तप में ही लीन रहते हैं। 'आप मुज़्त, मुज़्त करे संसार'। प्राणेश्वर सतगुरू कुराली में वास करके लोगों का उद्धार कर रहे हैं।

ॐ –ह्य दृष्टि सृष्टिवाद एक सिद्धांत है। इस सिद्धांत के मुताबिक ये जितना भी पदार्थ हमें नजर आता है, दृष्टि से ही यह बनता है। दृष्टि न हो तो यह कभी नहीं बन सकता। ज़्योंकि यह सृष्टि जिस शकल में हम देखते हैं, हमारे दृष्टिकोण के हिसाब से हमें नजर आता है अच्छा, भला या बुरा या जो कुछ भी हमें नजर आता है। यह सब दृष्टिकोण से ही नजर आता है। ज़्योंकि देखने मात्र से एक को जो सुख होता है, दूसरे के लिए वह सुख नहीं होता, वह दुख का कारण बनता है। यह सब दृष्टि के फर्क से ही होता है।

इस प्रकार यह जो सृष्टि के अंदर जितने भी अग्नि, वायु, आकाश या और भी जितने पदार्थ हैं, यह दृष्टि सृष्टिवाद के सिद्धांत को दृढ़ करता है। सृष्टि में दृष्टि न हो तो यह कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता किसी भी सूरत में। किसी भी पदार्थ को सिद्ध करने के लिए दृष्टि की जरूरत है, बिना दृष्टि के कोई भी पदार्थ सिद्ध नहीं होगा किसी भी प्रकार से। कोई कह सकता है कि जब आपकी दृष्टि नहीं रहता तो भी यह सृष्टि कायम रहता है। मगर जब भी किसी ने इस सृष्टि को देखा, दृष्टि से ही देखा। जब तक भी सृष्टि के अंदर हमने देखा या

किसी ने भी देखा, चाहे ब्रह्मा जी ने देखा तो दृष्टि से ही देखा। दृष्टि रहित सृष्टि को किसी ने देखा नहीं किसी भी सूरत में। दृष्टि के बिना सृष्टि नजर आ सकता है? दृष्टि न हो तो यह कभी भी सिद्ध नहीं होगा। यदि सृष्टि नजर आ सकता है तो दृष्टि की वजह से ही नजर आ सकता है। इसीलिए कहता हूं कि यह सृष्टि जो है यह दृष्टि से ही बनता है। जैसा हमारा दृष्टि होगा वैसे ही यह सृष्टि भासने लग जाता है। भिन्न-भिन्न शज़्लों में भासने लग जाता है, शत्रु में नजर आता है, मित्र में नजर आता है। इसके अंदर देवता नजर आता है या पशु नजर आता है या राक्षस नजर आता है। भिन्न-भिन्न शज़्लें जो नजर आती है यह सब दृष्टि की वजह से ही होता है। दृष्टि न हो तो यह कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता। अतः इससे यह सिद्ध होता है कि दृष्टि ही इसके मूल में है।

यह दृष्टि के अंदर बहुत भारी शज़्ति है। गहराई से देखें तो सूर्य, चंद्र, तारामंडल या आकाश, जल, वायु आदि जो सृष्टि में नजर आता है यह सब दृष्टि की वजह से ही नजर आता है। दृष्टि के बिना यह कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता। इसका अर्थ है कि दृष्टि के बिना सृष्टि नहीं। सृष्टि जो है इसका कर्ता ही दृष्टि माना जाता है। इसके बिना सृष्टि में कुछ नहीं समझा जा सकता। यह न समझना कि दृष्टि कोई छोटा-मोटा पदार्थ है, नहीं, यह एक व्यापक शज़्ति है। तमाम सृष्टि को जो देखता है, तमाम सृष्टि को जो समझता है। आप अपने छोटे से शरीर में बैठक हुए सूर्य को देखते हों, चंद्र को देखते हो, आकाश, जल, वायु को देखते हो। यह सब देख रहा है आप समझ नहीं रहा। यह देखने की शज़्ति कितना महान है। तमाम सृष्टि को जो देखता है, हम किसको नहीं देखते? गहराई से विचार करके देखेंगे तो पता चलेगा कि यह दृष्टि की शज़्ति महान है।

जो इस शरीर के अंदर दृष्टि की शज़्ति है वह इस सृष्टि में समष्टिगत सृष्टि के अंदर भी दृष्टि की शज़्ति है। इसके बिना कोई शज़्ति बना नहीं। तुमने अपनी शज़्ति से देख लिया, इसने अपनी करके देख लिया, उसने अपनी-अपनी करके देख लिया। संसार के जितने भी जीव-जंतु हैं वे सब अपना देखते प्रतीत होते हैं। देखने को चाहे अलग-अलग देखते प्रतीत होते हैं मगर वास्तव में तमाम दृष्टि की शज़्ति एक ही है। दूसरा कोई दृष्टि कभी

भी सिद्ध नहीं हुआ। कोई भिन्न दृष्टि नजर नहीं आएगा। एक ही दृष्टि है तमाम संसार में। हम देखते रहते हैं, यह तमाम सृष्टि एक ही दृष्टि है, एक दृष्टि की वजह से हमेशा एकत्व की भावना इसमें बनी रहती है। शास्त्रकारों ने भी एकत्व बनाने के लिए यही शिक्षा दिया। वास्तव में वे सब इस दृष्टि को मद्देनजर रखकर ही यह शिक्षा देता गया कि दृष्टि एक है, दो–तीन दृष्टि कभी भी नहीं होगा। जिस दृष्टि से तुम अग्नि को देखते हो, इसी प्रकार इस सृष्टि में जितने भी जीव–जंतु हैं सब इसी दृष्टि को देखता है, यह सब एक ही दृष्टि है। चाहे अग्नि को देखो, जल को देखो, पशु–पक्षी को देखो, यह वृक्ष को देख लो, लता को देख लो, यह दृष्टि में कोई फर्क नहीं। दृष्टि वही होगा। दृष्टि के इलावा और कोई नहीं होगा। दृष्टि की भावना की वजह से पशु, पक्षी, वृक्ष, लता और भिन्न शज़्लों के अंदर यह बनता रहता है। जहां तक उनका सिद्धांत कि यह पंचभूत जो सृष्टि है, यह भी दृष्टि की वजह से ही बनती है।

दृष्टि न हो तो पंचभूत कभी भी सिद्ध नहीं होगा। उत्पत्ति ही सृष्टि की, दृष्टि की वजह से माना जाता है। दृष्टि न हो तो यह उत्पत्ति करने का यदि संकल्प उठता है तो दृष्टि के बिना यह संकल्प कभी भी उठ नहीं सकता। यह सृष्टि जितनी भी भासता है यह दृष्टि की वजह से भासता है। दृष्टि के अभाव में यह कुछ भी नहीं बन सकता। इसे तुम ब्रह्म दृष्टि कहो, ईश्वर दृष्टि कहो या कोई दृष्टि भी कहो। यदि एक पशु है तो उस पशु के अंदर भी वही दृष्टि है। वह पशु जब किसी भी चीज को देखता है, अपनी दृष्टि से देखता है, अपने भाव से देखता है। जैसा उसके अंदर भाव छिपा होता है, वैसे वह देखता है। जैसे वह वृक्ष, लता आदि हैं, कहते हैं वास्तव में इनमें दृष्टि नहीं। दृष्टि इसके अंदर भी मौजूद होगा। दृष्टि इन के अंदर भी है मगर अपनी–अपनी भावना से वह दिखता है। यदि ईश्वर की कल्पना कोई पशु करे तो ईश्वर की भी पशु जैसा ही कल्पना करेगा। जैसे मनुष्य ने ईश्वर की कल्पना की तो मनुष्य जैसा ही उसका कल्पना किया। जैसे, ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि की जितने भी कल्पना करता है, ये सारे मनुष्य की शज़्ल में ही कल्पना किया उसने। भिन्न–भिन्न देवताओं का वर्णन किया जाता है, वह सब मनुष्य की शज़्त में ही कल्पना किया

जाता है। उसका हाथ है, पैर है, कान है, कुंडल है इत्यादि यह है, वह है। यह सारी की सारी मनुष्य दृष्टि ही है ज़्योंकि यह सारी मनुष्यों की कल्पना है। मनुष्य के अंदर मनुष्य कल्पना होने की वजह से ईश्वर को भी मनुष्यवत् कल्पना किया गया। इसी प्रकार यदि ईश्वर की कल्पना पशु करने लग जावे, लाजमी है वह उसकी कल्पना पशुवत् ही करेगा। मनुष्य ने ईश्वर को मनुष्य जैसा कल्पना किया तो जरूरी है पशु जो है वह ईश्वर को पशु जैसा ही कल्पना करेगा। पक्षी देख लिया जावे तो वह पक्षी भी ईश्वर को पक्षी जैसा ही कल्पना करेगा। एक वृक्ष यदि ईश्वर की कल्पना करने लग जावे, देखने लग जावे तो वह ईश्वर की वृक्ष जैसा ही कल्पना करेगा। मगर यह तमाम शज़्ल में वह मौजूद है चाहे उसकी कोई शज़्ल नहीं। मनुष्य की शज़्ल में, पशु की शज़्ल में, वृक्ष की शज़्ल में जो भिन्न-भिन्न शज़्ल है यह ईश्वर होने की वजह से। यह ईश्वर की शज़्ल में बड़ा गंभीर, बहुत बड़ा भारी दृष्टि होने की वजह से, हर शज़्ल में वहीं है। जो दृष्टि तुझ्हारे अंदर काम करती है वही दृष्टि समस्त संसार में काम कर रही है। सर्वत्र एक ही दृष्टि है।

यह देखो न, कौन सा ऐसा पदार्थ है जिसे तुम नहीं देखते। सूर्य को नहीं देखता है, चंद्रमा को नहीं देखता है, बड़ा-बड़ा तारामंडल को नहीं देखता और इसके ऊपर भी साईंसदानों ने बारीक से बारीक पदार्थों को देखने का यत्न किया। वह किसके जरिए से? वह भी तो एक दृष्टि है। दृष्टि के बिना दृष्टिकोण नहीं। बारीक से बारीक पदार्थ जैसे अणु वगैरा का अनुसंधान किया, यह भी एक दृष्टिकोण है। तारामंडल में एक ऐसा तारा भी है जिसकी रोशनी अभी तक पृथ्वी मंडल पर पहुंची नहीं है। जब से सृष्टि बनी है, तभी से वह वहां से चला हुआ है रोशनी, मगर उसकी रोशनी अभी तक पृथ्वी तक पहुंचा नहीं। इतना दूर है कि उसका निर्णय ही नहीं कर सकते किसी भी प्रकार से निर्णय नहीं कर सकते। निर्णय करने के लिए कोई गुंजायश ही नहीं; कोई पैमायश ही नहीं। माप न होने की वजह से उन्होंने उसे लाईट ईअर नाम दिया है। लाईट ईअर समय गुजर जाने पर ऐसा बन जाएगा। ऐसा उन्होंने कहा। लाईट ईअर का हिसाब तो बहुत लज़्बा-चौड़ा होता है। हिसाब करना ही बड़ा भारी कठिन होता है, ज़्योंकि कोई निर्णय ही नहीं कर सकते। मगर उसे देखा जरूर है।

देखा न हो तो उसे पहचाना किस तरह आखिर देखा जरूर है। देखा जरूर है किसी न किसी दृष्टि से देखकर ही उसका निर्णय किया।

तो कहने का मतलब है इसी प्रकार इस दृष्टि को देखो, जब कि यह इतना लज़्बा चौड़ा है। तमाम संसार को घेर कर भी ऊपर खड़ा हुआ है यह वो दृष्टि है। वास्तव में यह दृष्टि है, ईश्वर-दृष्टि है कि जैसे ईषण करने से ही पैदा हुआ। ईश्वर के ईषण से सृष्टि पैदा हो गया, वह दृष्टि है, दृष्टि से ही वह बनता है। ईश्वर के देखने मात्र से सृष्टि पैदा हुआ कहता है। यदि ईश्वर के देखने से सृष्टि पैदा हुआ तो वह भी तो दृष्टि है। अभी भी हम सृष्टि को देखते हैं तो किस की सृष्टि को देखता है। देखना ही है न, देखने पर ही सृष्टि का अस्तित्व सिद्ध होगा तो बिना दृष्टि के भी सृष्टि सिद्ध हो सकता है? कभी भी सिद्ध नहीं होगा। देखने पर ही सृष्टि सिद्ध होता है, न देखने पर सृष्टि नहीं सिद्ध होता। ज़्योंकि सृष्टि के अंदर भी जो प्रत्यक्ष नजर आता है वह दृष्टिकोण के ऊपर ही होता है।

जैसा कि एक मनुष्य आज शत्रु नजर आता है, वही किसी टाईम पर मित्र नजर आता है, किसी को भाई किसी को बंधु, किसी को कुछ, किसी को कुछ, भिन्न-भिन्न प्रकार से हम उसे देखते हैं। यह भिन्नत्व कहां से पैदा हुआ? आखिर यह दृष्टिकोण ही है न, देखने का जो सिलसिला है, उसी के ऊपर ही यह भिन्नत्व छिपा हुआ है। जितने भी भिन्नता है, विविधता है, यह देखने के ऊपर ही छिपा होता है। यह दृष्टिकोण के जरिए से ही विविधता है। यदि एकत्व को देखने लग जाएं तो यह सारी सृष्टि एक ही नजर आने लगेगी। इसीलिए शास्त्रकारों ने या भिन्न-भिन्न महात्मा लोगों ने हमें यह शिक्षा दिया कि जितना भी यह सृष्टि तुज़्हें नजर आता है, यह ईश्वरमय है। ईश्वर की शज़्ल में इसे देखो, यह ईश्वर नजर आने लग जाएगा। जैसे किसी को शत्रु की नजर से देखें तो वह शत्रु नजर आने लगता है। वैसे किसी टाईम पर किसी को हम मित्र की शज़्ल में देखने लग जाएं तो वह मित्र नजर आने लग जाता है। इसी तरह यह सृष्टि सारी को ईश्वर की शज़्ल में देखने लग जावें तो यह सृष्टि सारी की सारी ईश्वरमय होगी। वाकई है ही ऐसा। यह सृष्टि जो है यह सारी की सारी ईश्वरमय है। जैसी हमारी दृष्टि है वैसा ही वह नजर आने लग जाएगा। मैं

पहले कह चुका पशु यदि देखेगा तो वह पशु की शज़्ल में ही कल्पना करेगा, मगर ईश्वर पशु नहीं। यह न समझना कि पशु में ईश्वर नहीं। पशु में भी ईश्वर है। ईश्वर मौजूद न हो तो उसमें हरकत नहीं होगी। किसी वस्तु में हरकत न होगी तो उसका अस्तित्व कभी भी सिद्ध नहीं होगा। ऐसा कोई पदार्थ सिद्ध नहीं होता जिसके अंदर कुछ न कुछ हरकत न हो। पत्थर जिसे कहते हैं उसमें भी हरकत होगी ज़्योंकि उसमें भी चेतन्य छिपा हुआ है। जहां हरकत है वहां ईश्वर मानना पड़ेगा। इसी प्रकार मानना होगा कि सृष्टि में हरकत जो है वह दृष्टि की ही हरकत है। दृष्टि के सिवाय इस की हरकत कभी भी सिद्ध नहीं होगी, ज़्योंकि यह हरकत किसके जरिए से सिद्ध होता है? यह सृष्टि के जरिए से ही सिद्ध होगा, दृष्टि के अभाव में यह हरकत कभी भी सिद्ध नहीं होगा।

वह दृष्टि ही हरकत की शज़्ल में खड़ा हुआ है। तो यदि उस हरकत को हम देखेगा तो कोई अणु पदार्थ भी ऐसा नहीं जिसके हरकत न हो। हर पदार्थ में वह हरकत छिपा हुआ है। उसी को हम ईश्वर कहता है, यह भी एक दृष्टिकोण है। यदि यह दृष्टिकोण दृढ़ हो जाए तो यह सृष्टि सारी की सारी ईश्वरमय होगी। गलत भी नहीं, बिल्कुल सही बात है। यह सृष्टि वास्तव में है ही ईश्वरमय। यदि हमारा दृष्टि ईश्वरमय न हो। हमारा दृष्टि ईश्वरमय होने पर वह ईश्वरमय कैसे बनता है? यदि वाकई वह ईश्वरमय है इसी कारण वह ईश्वरमय बनता है। ईश्वर के इलावा कुछ भी नहीं। मगर अज्ञान की वजह से इस दृष्टि को हमने महदूद कर लिया है। महदूद होने की वजह से वह व्यापक दृष्टि ममत्व की वजह से हमने महदूद कर लिया है। महदूद करने की वजह से वह व्यापक दृष्टि हमें मिल नहीं रहा है। वास्तव में शास्त्रकारों ने या भिन्न भिन्न लोगों ने इस दृष्टि को व्यापक बनाने का हमें शिक्षा दिया। भिन्न भिन्न प्रकार से, भिन्न शज़्लों में, भिन्न भिन्न ढंग से, व्यापक बनाने का हमें शिक्षा देता गया। उस व्यापक शिक्षा को यदि अपना लिया जावे, लाजमी है तो यही दृष्टि जो हमें महदूद नजर आ रही है, यही दृष्टि व्यापक बन जाएगा, यही महान दृष्टि बन जाएगा यदि इस रहस्य को समझें।

वास्तव में दृष्टि कोई दृष्टि और नहीं होती। यही दृष्टि है। इसी दृष्टि की दो शज़्ल है। व्याप्य रूप और व्यापक रूप। जिस टाईम किसी महदूद चीज को हम देखता है तो वह व्याप्य रूप है। महदूद पदार्थ को देखना छोड़ दें तो वह व्यापक रूप होगा। वह व्यापक रूप के अंदर तमाम सृष्टि उसमें छिपा हुआ होता है। इसी के जरिए से यह सृष्टि पैदा होती है। यह सृष्टि जितना भी है वह उस दृष्टि से पैदा होगा। फर्ज कर लो कि तुम या और कोई इस सृष्टि में जो कुछ भी सिद्ध होता है, अपने आपको सिद्ध करते हो। किसके जरिए से सिद्ध होता है? दृष्टि के अभाव के अंदर सिद्ध हो सकते हो? कभी भी नहीं। पहले देखोगे तभी जाकर वह सिद्ध होगा। दृष्टि बिना यह कुछ भी नहीं सिद्ध होगा। मगर दृष्टि हमारे अंदर होने के बावजूद उसके रहस्य को हम न समझने की वजह से उसका फायदा उठाने में हम असमर्थ ही रहता है। वास्तव में यथार्थ को देखा जाये तो इस दृष्टि को विशाल बनाने का ही हमें शिक्षा दिया है शास्त्रकारों ने।

शास्त्र कहता है सबको ईश्वरमय देखो, सब को ईश्वर भाव से देखो, सबको मित्र भाव से देखो, प्रेम से देखो इत्यादि जो कहते हैं। इसका रहस्य ही यही है कि यह जो व्यापक दृष्टि है यह किसी न किसी प्रकार जाग्रत हो जाए। सबसे प्रेम-दृष्टि से देखने लग जायेंगे तो हमारी बुद्धि के अंदर छिपी हुई दृष्टि व्यापक होगी। यह प्रेम जिसे कहते हैं यह भी एक दृष्टिकोण है। भज़्ति जिसे कहते हैं यह भी एक दृष्टिकोण है। ध्यान जिसे कहते हैं यह भी एक दृष्टि कोण के इलावा कुछ भी नहीं, ज़्योंकि ध्यान एक जैसा तो नहीं होता, भिन्न भिन्न होता है, अपना अपना दृष्टिकोण है। ध्यान-क्रिया जो है उसका लक्ष्य भिन्न भिन्न हो सकता है मगर ध्यान-क्रिया में कोई फर्क नहीं होगा, दृष्टिकोण वहीं होगा। उस दृष्टिकोण के अनुसार वह ध्यान करता है। इसका मुज़्य उद्देश्य यह है कि वह उस दृष्टि को पहचाने कि हमारे अंदर छिपा हुआ जो छोटा व्याप्य, छोटा दृष्टि तुम समझते हो, मगर दृष्टि छोटा कोई नहीं, उसे पहचानें।

यह सृष्टि, स्थिति, संहार जो सृष्टि के अंदर होता है यह दृष्टिकोण के जरिए से होता है, यदि यह सृष्टि हुआ या पालन हुआ, पालन क्रिया को किस तरह से तुम समझते

हो, या देखते हो। किसके जरिए से तुम पालन-क्रिया को देखते हो। यह सृष्टि उत्पन्न हुआ। किसके जरिए से वह उत्पन्न होना देखते हो? संहार हुआ तो देखते हो, किसके जरिए से संहार हुआ देखते हो। दृष्टि ही सिद्ध होगा देखने वाला, दृष्टि के जरिए से ही तुम तीनों क्रियाओं को देखते हो। उत्पत्ति होना, सृष्टि का पालन होना और सृष्टि का संहार होना-ये तीनों क्रिया दृष्टि के जरिए से तुम देखते हो। दृष्टि न हो तो यह कुछ भी नहीं। दृष्टि के जरिए से तुम सृष्टि सिद्ध करता है। सृष्टि, स्थिति और संहार-तीनों क्रिया जो होता है, यह दृष्टि के जरिए से ही होता है। दृष्टि के बिना यह कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता। तो कहने का मतलब है कि दृष्टि का बहुत बड़ा भारी लज़्बा चौड़ा दायरा है, मगर न समझने की वजह से इसे हम महदूद समझ बैठा।

थोड़ी देर के लिए इस क्रिया को कंट्रोल करके, बुद्धि को स्थिर करके, मन को स्थिर करके देखें तो नजर आएगा कि यह सृष्टि जो कुछ भी नजर आता है, इसका रहस्य ज़्या है? किसके जरिए से यह पैदा होता है, किसके जरिए से कल्पना होकर उत्पन्न होता है, किसके जरिए से संहार होता है, किसके जरिए से यह पालन होता है, यह रहस्य सारा खुल जाएगा। यह एकमात्र दृष्टिकोण कहीं अन्यत्र छिपा हुआ है? ज़्या तुज़्हारे अंदर छिपा हुआ यह दृष्टि है। वह तीनों क्रिया अंदर तुज़्हारे अंदर भी होता है। यदि सृष्टि के अंदर कुछ भी नजर आता है तो सृष्टि, स्थिति, संहार को हटा दिया जाये तो संसार में कुछ भी सिद्ध नहीं होगा। सृष्टि के अंदर कुछ नजर आता है तो सृष्टि, स्थिति और संहार, तीनों क्रियाओं के जरिए से ही यह सिद्ध होता है और कुछ भी नहीं होगा। यह तीनों क्रियाएं हमारे अंदर भी हैं। हर क्रिया के अंदर ये तीनों अवस्था तुज़्हें मिलेगा-सृष्टि, स्थिति, संहार। जैसे हम बोल रहा, जब बोलना शुरू किया तो सृष्टि हुआ, जब बोलता रहा तो सृष्टि का पालन होगा, बोलना छोड़ दिया तो संहार होगा। ऐसे ही चलने की सृष्टि होती है। चलने से चलने की सृष्टि होती है, चलते रहेंगे तो सृष्टि का पालन होगा, चलना बंद हो जाएगा तो सृष्टि का संहार हो जाएगा। इस प्रकार सवेरे से शाम तक जितने भी कर्म तुम करोगे यह सृष्टि, स्थित और संहार क्रिया ही चल रहा है। सृष्टि में जितने काम तुम करता है वह सृष्टि, स्थिति और

संहार ही करता है और कुछ भी नहीं होता। देखता है तो उसका सृष्टि होगा, देखता रहा तो उसका पालन हो गया, देखना बंद कर दिया तो उसका संहार हो जाएगा। संसार में तुम ध्यान से देखोगे तो सवेरे से शाम तक और जन्म से मौत तक तुम यही कुछ करते हो।

ज़्यों इसके अंदर होता है। इसके अंदर वह दृष्टि छिपा हुआ है। वह दृष्टि ही सृष्टि का कारण है। वह चेतन्य शज़्ति, वह क्रिया शज़्ति इसमें छिपा होता है। इसी कारण ये तीनों क्रियाएं इसके अंदर होता है। सिर्फ तुज़्हारे अंदर नहीं हर किसी जीव में ऐसा होता है। यह वृक्ष जो खड़ा हुआ है, इसके अंदर भी यह सृष्टि, स्थिति, संहार तीनों चलता है। पशु जितने तुम देखते हो उनके अंदर भी ये तीनों क्रियाएं चलती है ज़्योंकि वह काम करता रहता है। एक काम खत्म हो जाता है तो वह बैठ जाता है, बैठने पर संहार हो जाता है। इसलिए तीनों क्रिया उसमें चलता रहता है।

इससे सिद्ध होता है कि ये तीनों क्रिया हर किसी में चलता रहता है ज़्योंकि यह ब्रह्म-दृष्टि उसके अंदर भी छिपा हुआ है। इसीलिए वह क्रिया हरेक के अंदर व्यापक रूप में रहता है। इसलिए हमारा कहने का मतलब है इस दृष्टि को समझने का कोशिश करो। जिस दृष्टि को हम महदूद समझकर हेय या हीन रूप में देखते हैं, वास्तव में यह हेय नहीं। इसे ग्रहण करना चाहिए। अच्छी तरह गहराई से विचार करके देखेंगे तो पता चलेगा यह दृष्टि बहुत विशाल दृष्टि है। तमाम ब्रह्माण्ड को सिद्ध करने वाली दृष्टि यही है। ब्रह्माण्ड को कौन सिद्ध करता है? ब्रह्मा जी ने सिद्ध किया या किसी ने भी सिद्ध किया। किसके जरिए से सिद्ध किया। तो मानना होगा कि दृष्टि के जरिए से ही यह सिद्ध किया। दृष्टि के बिना यह कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता, किसी भी सूरत में सिद्ध नहीं हो सकता। इस दृष्टि से समझना चाहिए। इसे भिन्न भिन्न नाम से जाना है। हर पदार्थ दृष्टि के ऊपर ही निर्भर होता है। किसी को कत्ल करते हो, किसी को गाली देते हो तो वहां भी दृष्टि मौजूद होगा। दृष्टि बिना तुम गाली नहीं दे सकते हो। दृष्टि के बिना तुम संहार नहीं कर सकते हो। गोली तभी चलेगा जब दृष्टि हो। दृष्टि के अभाव में गोली नहीं चल सकती। बिना देखे भी गोली चलाओगे तुम, तो भी उसके अंदर दृष्टि जरूर है। बिना दृष्टि के कुछ भी कर्म नहीं हो

सकता। इसी प्रकार सृष्टि में भी जितनी क्रियाएं हैं, ये दृष्टि पर ही निर्भर होता है। बिना दृष्टि के कुछ नहीं हो सकता। मगर ये दृष्टि हमारे अंदर होने के बावजूद भी, मनुष्य बनने के बावजूद भी हम उसे समझने में असमर्थ रहता है। यही एक बड़ा भारी भूल है।

इसी भूल को मिटाने के लिए शास्त्रकारों ने भिन्न भिन्न ग्रंथ हमारे सामने रखा। यह न समझना शास्त्रकारों ने कोई नई चीज तुझ्हारे अंदर पाने के लिए शास्त्र बनाए। ज़्योंकि जो वस्तु तुझ्हारे अंदर नहीं, उसके विपरीत यदि कोई शास्त्र कहे तो वह हमारे अंदर आने वाला नहीं। हमारे अंदर वही चीज प्रकट हो सकता है जो हमारे अंदर मौजूद है। जैसे कृष्ण ने अर्जुन को गीता उपदेश दिया। यदि अर्जुन के अंदर पहले से ही गीता उपदेश न होता तो वह इसे कभी भी ग्रहण नहीं कर सकता था। ज़्योंकि वह ज्ञान उसके अंदर पहले से मौजूद था। उसको जागृत करने का कोशिश किया कृष्ण ने। उसी तरह कोई भी शास्त्र, शास्त्रकारों ने बनाया है उसमें तुझ्हारे अंदर मौजूद चीज को जागृत करने का प्रयत्न ही किया गया है। इशारा किया गया है कि तुझ्हारे अंदर यह चीज छिपा हुआ है। इससे तुम फायदा उठा सकते हो तो उठा लो। नहीं उठाओगे तो तुझ्हारी मर्जी है। यही उन लोगों ने शिक्षा दिया।

तो कहने का मतलब है कि वास्तव में शास्त्र कोई भी आप से भिन्न पदार्थ सिद्ध नहीं कर सकता किसी भी सूरत में। सृष्टि के अंदर जितने भी पदार्थ सिद्ध होता है, तुझ्हारे जरिए से ही सिद्ध होगा। तुम न हो तो कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए हमारा कहने का मतलब है कि तुम किसी जगह भी रहते हो, दृष्टि की शज़्ल में तुम संसार में फैला हुआ है। इस दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करो, इसी में कल्याण है। कल्याण के लिए और कहीं जाने की जरूरत नहीं। इस दृष्टिकोण को तुम समझोगे, यह सृष्टि सारी की सारी उस परमहंस का रूप धारण कर लेगा। जैसे किसी एक भज़्त ने कहा है कि जप करो, इतना जप करो जिसके जरिए से तुझ्हारी दृष्टि में ईश्वर ही ईश्वर नजर आने लग जाए। ईश्वर के इलावा कोई और नज़र आए तो ऐसे भजन का लाभ ही ज़्या? वह दृष्टिकोण का तबादला करने को कहा, भजन दृष्टिकोण का तबादला करना ही है और कुछ भी नहीं। इस समय तुझ्हें भिन्न भिन्न शज़्लें नजर आती है। मगर इन भिन्न भिन्न शज़्लों में तुझ्हें ईश्वर ही

ईश्वर नजर आने लग जाए तो यही भज़्ति का उद्देश्य है। भज़्ति और कुछ तो नहीं होता, यही उद्देश्य होता है न भज़्ति का एकमात्र यही तो उद्देश्य होता है। जब तक भज़्ति बगैरा करके दृष्टिकोण का यह तबादला नहीं हुआ तब तक भज़्ति को अधूरा ही माना जाएगा। यदि दृष्टिकोण का यह तबादला हो गया तो सृष्टि के अंदर सारे भगवान ही नजर आने लग जाएगा। वही यथार्थ भज़्ति होगा। वह यथार्थ दृष्टि से सब एक ही होगा। भिन्नत्व कभी सिद्ध हो ही नहीं सकता। यदि भज़्ति का नाम लेते हुए भिन्नत्व को सिद्ध करने का प्रयत्न करता है तो वह कोई भज़्ति नहीं होगा। भज़्ति के अंदर एकत्व सिद्ध होता है। एकत्व सिद्ध न हो तो वह भज़्ति कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता। वह भज़्ति नहीं अभज़्ति होगा।

अनेकत्व कहां पैदा होता है? जहां अभज़्ति होगा। जहां भज़्ति हो वहीं एकत्व सिद्ध होगा। एकत्व कहां सिद्ध होगा? जहां भज़्ति हो। भज़्त भी, अभज़्त भी, जो कुछ भी प्रतीत होता है, आखिर यह भी तो एक दृष्टि है। दृष्टि के इलावा इसके अंदर कुछ भी नहीं। इसलिए हमारे कहने का मतलब है कि हमारे अंदर छिपे हुए यह दृष्टि को देखने की कोशिश करो। युज़्ति से यह समझाया गया है कि तुज़्हारे अंदर छिपा हुआ यह दृष्टि है। तमाम संसार में यही दृष्टि फैला हुआ है। जिस दृष्टि से तुम देखते हो, उसी दृष्टि से हम देखता है। उसी दृष्टि से यह देखता है, तमाम संसार देखता है। अन्य कोई दृष्टि नहीं। दो दृष्टि कभी हुई है? मगर थोड़ी देर के लिए यह आंखें बगैरा काम करता है तो हम समझ जाता है यह सब भिन्न भिन्न दृष्टि है। मगर इसके पीछे जो काम करता है यह एक ही दृष्टि है। अन्य कोई दृष्टि नहीं। यह एक ही दृष्टि है। उस दृष्टि को हम समझा नहीं। न समझने की वजह से यह इसे ही हम दृष्टि समझता है। यह आंख जो है यह यथार्थ दृष्टि नहीं है। नहीं है यह यथार्थ दृष्टि। यथार्थ दृष्टि इसके पीछे छिपा हुआ है जो सृष्टि, स्थिति संहार बगैरा करता है। यह आंख तो नहीं करता है। मगर आंख के अंदर रहकर वह काम करता है। यह जो गोला बगैरा होता है आंखों के अंदर, यह वह नहीं है, इसके पीछे वह छिपा हुआ है। वास्तव में आंख रूपी इंद्रियों के रहने की जगह है यह। वास्तव में यह इंद्रियां नहीं है, यह नहीं है, आंख नहीं है। वह उसी के जरिए से ही यह सब कुछ देखता है।

इस यथार्थ दृष्टि को यदि हम समझ लेंगे तो हमारा कल्याण होने में कोई देरी नहीं है ज़्योंकि दृष्टि को यदि आपने पहचान लिया तो इस तमाम सृष्टि में एक ही यथार्थ तुज्हें नजर आएगा, और कोई नहीं। एक ही दृष्टि से तमाम सृष्टि नजर आएगा, दूसरा कोई पदार्थ नजर नहीं आता है। भज़्त लोग कहता है ईश्वर सबको देखता है, अंतर्यामी है, वह सब देखता है। तो कौन देखता है? आखिर देखता तो दृष्टि है न। चाहे ईश्वर देखे चाहे तुम देखो चाहे और देखे। तो देखने में तमाम संसार को देखने की क्रिया जो है किसके जरिए से मानते हो? दृष्टि के जरिए से माना। यदि ईश्वर को देखना मानते हो तो वह इंद्रियों से नहीं, दृष्टि से देखते हो, और किसी जरिए से देख नहीं सकते। देखने की यह क्रिया केवल दृष्टि द्वारा ही होगा।

किसने देखा? तो तमाम संसार को यदि ईश्वर देखता है तो किसके जरिए से देखता है? दृष्टि के जरिए से देखता है। सिद्ध होता है यदि ईश्वर संसार को दृष्टि के जरिए से देखता है तो हम भी संसार को दृष्टि के जरिए से देखता है, तुम नहीं देखता? जिस संसार को ईश्वर ने सृष्टि किया, ईश्वर ने देखा। ईश्वर के देखने से यह संसार बन गया तो बताओ भला तुज्हारे अंदर कौन सी दृष्टि है। एक ही दृष्टि है ज़्योंकि दृष्टि ही कभी भी नहीं होगा। वही दृष्टि है जिसके जरिए से ईश्वर ने इन पंचतत्वों को तैयार किया। जितना भी यह तत्व बगैरा फैला हुआ है उसी दृष्टि से फैला है। तुम भी उसी दृष्टि से देखते हो, जल को देखते हो, अग्नि को देखते हो, वायु को देखते हो और भी इसमें भिन्न से भिन्न जो पदार्थ इसमें छिपा हुआ है उसे भी हम देखता है। जो ईश्वरीय दृष्टि है वही तुज्हारे अंदर छिपा हुआ है। मगर हम समझता नहीं। कृष्ण ने अर्जुन को कहा–तुम समझते नहीं, मैं समझता हूं, यही फर्क है। फर्क यही है हम समझता है, तुम समझता नहीं।

यही सिलसिला ईश्वर के विषय में सही है। आप जानता नहीं, आपने इस दृष्टि को समझा नहीं, इसलिए महदूद रहते हो। यदि इस रहस्य को समझ जाओ कि वही दृष्टि जो ईश्वर के अंदर काम करती है, वही तुज्हारे अंदर भी काम करती है। दूसरा कोई भी दृष्टि कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता है, इसीलिए हमारा कहने का मतलब है कि कल्याण–कामी

पुरुषों का फर्ज है इस दृष्टि को समझने का प्रयत्न करें। यह दृष्टि तुम्हारे अंदर है, कहीं दूर से लाने की जरूरत नहीं। जो तुम्हारे अंदर मौजूद है तो उस दृष्टि को समझने की काशिश करो। इस दृष्टि को मद्देनजर रखकर विचार करके देखो तो दृष्टि कहां तक पहुंचता है। तुम्हें पता चल जायेगा कि इस दृष्टि का महात्म्य कितना बड़ा भारी है। ज़्योंकि वह मनुष्य ही कर सकता है और किसी योनी में यह सुविधा नहीं कि इस रहस्य को समझ सके।

इसीलिए हमारा कहने का मतबल है यह दृष्टि सृष्टिवाद के मुत्तलिक हमने बताने का प्रयत्न किया। वाद है यह। उस दृष्टि को समझने की कोशिश करो, इसी में कल्याण है। हम सहज ही उसकी प्राप्ति कर सकता है। हमारे अंदर छिपा हुआ है। यह हमसे कहीं बाहर नहीं है। मगर छिपा हुआ होने की वजह से, सूक्ष्म होने की वजह से, हमारी समझ में नहीं आता। यदि सही दिमाग से काम लिया जाये, लाजमी है कि यह सारे का सारा रहस्य खुल जाएगा। जब तक हम सूक्ष्म बुद्धि से काम नहीं लेते वह गुप्त रहता है। जब सूक्ष्म बुद्धि से काम लेना शुरू कर देंगे तो आपे आप प्रकट हो जायेगा। कोई भी पदार्थ जो अत्यंत सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, छिपा हुआ है, सृष्टि के अंदर यदि हम सूक्ष्म शुरू कर देंगे तो आपे आप प्रकट हो जायेगा। कोई भी पदार्थ जो अत्यंत सूक्ष्मातिसूक्ष्म है, छिपा हुआ है, सृष्टि के अंदर यदि हम सूक्ष्म बुद्धि से काम लेवें तो वह प्रकट हो जायेगा। उसको छिपाने के लिए कोई गुंजायश नहीं रहेगा। यदि सूक्ष्म दृष्टि से काम नहीं लेंगे वह छिपा रहेगा। काम लेंगे तो वह प्रकट हो जायेगा। इसी प्रकार ईश्वर भी अत्यंत सूक्ष्म कहा जाता है। सूक्ष्म होने की वजह से प्रत्यक्ष वह नजर नहीं आता। मगर अत्यंत सूक्ष्म बुद्धि से काम लेने लग जाये, तमाम सृष्टि में भी ईश्वर ही नजर आने लग जाएगा। अन्य कोई पदार्थ नजर नहीं आयेगा। इसीलिए हमारा कहने का मतलब है कि बुद्धि को कुछ सूक्ष्म बनाने की कोशिश करो, फिर कल्याण होने में देरी नहीं। कल्याण होने का और कोई तरीका नहीं।

卐 बोल स्वामी जी महाराज की जय 卐

''अपराजिता मन्त्र''

ॐ ज़्लीं बले अबले महाबले

असिद्ध साधिनी स्वाहा ज़्लीं ॐ॥

''बगलामुखी मन्त्र''

ॐ हलीं बगलामुखि सर्व दुष्टाणाम्

वाचम् मुखम् पदम स्तज़्भय

जिहवाम् कीलय बुद्धिं

विनाशाय हलीं ॐ स्वाहा॥